بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصار اللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 03 अप्रेल 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(शहादत महीने की तिथि 03,1405 हश)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलै. के पुर-मआरिफ़ इरशादात की रोशनी में तौहीदे इलाही का ईमान अफ़रोज़ तज़किरा।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 03.04.2026
محلہ احمدیہ قادیان پنجاب 143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۬ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्य्दहुल्लाहू तआला बिनसृहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुनिया में तौहीद के क़याम के लिए दर्द, कोशिश और साहस और शिर्क के हर पहलू के मुक़ाबिल एक मज़बूत चट्टान की तरह खड़े हो जाने और हर क़ौम के शिर्किया ख़यालात के ख़िलाफ़ खड़े हो जाने और हक़गोई के बारे में हम पहले पढ़ते रहे हैं।

इस हवाले से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ख़याल करना चाहिए कि किस इस्तिक़लाल से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने दावा-ए-नबुव्वत पर बावजूद पैदा हो जाने हज़ारों ख़तरात के, और खड़े हो जाने लाखों मुआनिदों, मुज़ाहिमों और डराने वालों के अव्वल से आख़िरी दम तक साबित और क़ायम रहे।

फ़रमाया कि फिर साफ़गोई इस क़दर कि तौहीद का वअज़ करके सब क़ौमों, सारे फ़िरक़ों और सारे जहान के लोगों को जो शिर्क में डूबे हुए थे मुख़ालिफ़ बना लिया... सोचना चाहिए कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यकलख़्त (सहसा) हर एक ख़्वेश व बेगाना से बिगाड़ लेना और सिर्फ़ तौहीद को — जो उन दिनों में इससे ज़्यादा कोई नफ़रती चीज़ न थी, और जिसके कारण सैकड़ों मुश्किलें पड़ती जाती थीं, बल्कि जान से मारे जाना नज़र आता था — मज़बूती से पकड़ लेना ,यह किस मसलहत-ए-दुनयवी का तक़ाज़ा था।

फ़रमाया कि मासिवा इसके जब अक़्लमंद आदमी इन हालात पर ग़ौर करे कि वह ज़माना जिसमें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मबऊस हुए — हक़ीक़त में ऐसा ज़माना था जिसकी हालत-ए-मौजूदा एक

बुज़ुर्ग और अज़ीमुल-क़द्र मुसलेह-ए-रब्बानी और हादी-ए-आसमानी की अशद मुहताज थी — और जो जो तालीम दी गई वह भी वाक़ई सच्ची और पाक थी जिसकी निहायत ज़रूरत थी।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि तौहीद जो मदार-ए-नजात है | किस किताब के ज़रिए से दुनिया में सबसे ज़्यादा शाइअ हुई... भला कोई बतलाए तो सही क्या इंजील से तौहीद दुनिया में फैली है? ईसाई जिनकी तालीमात ही तीन ख़ुदाओं पर मुनहसिर है ,वह क्योंकर तौहीद के मुनादी होंगे। उनकी नज़र में फ़र्ज़ी बहिश्त यूरोप की दो बुज़ुर्ग क़ौमों रूसियों और अंग्रेज़ों को निस्फ़ निस्फ़ करके दी जाएगी। और अब इसमें भी और बड़े मुल्क तक़सीम हो गए हैं। अमेरिका वाले भी कहते हैं , बल्कि अब तो यहाँ तक कहा जाने लगा है कि अमेरिकी सदर डोनाल्ड ट्रम्प मसीह की आमद-ए-सानी है। (इन्ना लिल्लाह) और मुवह्हिदीन (एक ख़ुदा को मानने वाले) उनकी नज़र में आग में डालेजाएँगे।

आज सफ़हा-ए-दुनिया में वह चीज़ जिसका नाम तौहीद है बजुज़ उम्मत-ए-आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के और किसी फ़िरक़े में नहीं पाई जाती और बजुज़ क़ुरआन शरीफ़ के किसी और किताब का निशान नहीं मिलता जो करोड़ों मख़लूक़ात को वहदानियत-ए-इलाही पर क़ायम करती हो और कमाल तअज़ीम के साथ उस सच्चे ख़ुदा की तरफ़ राहबर (मार्ग दर्शक) हो। हर एक क़ौम ने अपना अपना मसनूई ख़ुदा बना लिया है और मुसलमानों का वही ख़ुदा है जो क़दीम से लाज़वाल और ग़ैरमुबद्दल है और अपनी अज़ली सिफ़तों में ऐसा ही है जैसा पहले था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस ज़माने में मबऊस हुए थे जब तमाम दुनिया में शिर्क, गुमराही और मख़लूक़-परस्ती फैल चुकी थी और तमाम लोगों ने उसूल-ए-हक़्क़ा को छोड़ दिया था और सिरात-ए-मुस्तक़ीम को भूल भला कर हर एक फ़िरक़े ने अलग अलग बिदअतों का रास्ता ले लिया था।अरब में बुत- परस्ती का निहायत ज़ोर था। फ़ारस में आतिश-परस्ती का बाज़ार गर्म था। हिंद में इलावा बुत-परस्ती के और हज़ारहा तरह की मख़लूक़-परस्ती फैल गई थी। पस आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ऐसी आम गुमराही के वक़्त मबऊस होना जब ख़ुद हालत-ए-मौजूदा ज़माने की एक बुज़ुर्ग मुआलिज और मुसलेह को चाहती थी और हिदायत-ए-रब्बानी की कमाल ज़रूरत थी ऐसे में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़ुहूर फ़रमा कर एक आलम को तौहीद और आमाल-ए-सालेहा से मुनव्वर करना और शिर्क व मख़लूक़-परस्ती का जो उम्मुश- शुरूर है क़लअ क़मअ करना ,यह इस बात पर साफ़ दलील है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा के सच्चे रसूल हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब रसूलों से अफ़ज़ल हैं।

फ़रमाया: जब लोग ख़ुदा का रास्ता भूल जाते हैं और ख़ुदा व तौहीद-परस्ती को छोड़ देते हैं तो ख़ुदावंद तआला अपनी तरफ़ से किसी बंदे को बसीरत-ए-कामिल अता फ़रमा कर और अपने कलाम और इलहाम से मुशर्रफ़ करके बनी आदम की हिदायत के लिए भेजता है, ताकि जिस क़दर बिगाड़ हो गया है उसकी इस्लाह करे। और इसमें असल हक़ीक़त यह है कि परवरदिगार जो क़य्यूम-ए-आलम है और जो दुनिया को क़ायम रखने वाला है और बक़ा व वजूद-ए-आलम का उसी के सहारे और आसरे से है , वह अपनी फ़ैज़ान-रसानी की सिफ़त को मख़लूक़ से दरेग़ नहीं करता और न बेकार और मुअत्तल छोड़ता है बल्कि हर एक सिफ़त उसकी अपने मौक़े पर फ़ील-फ़ौर ज़ुहूरपज़ीर हो जाती है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि फिर इस ज़माने में हम देखते हैं कि अल्लाह तआला के वादे के मुताबिक़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आशिक़-ए-सादिक़ को ख़ुदा तआला ने तौहीद के क़याम के लिए मामूर किया। इस ज़माने में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम , जो मसीह मौऊद और महदी मौऊद हैं , आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीम और सुन्नत का अमली नमूना थे। और आप अलैहिस्सलाम का दिल ही अपने आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तिबा में अल्लाह तआला की तौहीद के फैलाने के लिए एक दर्द से भरा हुआ था।

चुनाँचे हमें आप अलैहिस्सलाम की तहरीरात और आप अलैहिस्सलाम की अमली ज़िंदगी में इसकी बहुत सी मिसालें नज़र आती हैं जिनमें से चंद एक मैं पेश करता हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला का हमारे साथ भी अजीब मुआमला है। हमारा यह इलहाम कि: نْتَ مِنِّیْ بِمَنْزِلَةِ تَوْحِیْدِیْ وَ تَفْرِیْدِیْ अन्त मिन्नी बिमन्ज़िलति तौहीदी व तफ़रीदी एक नई तर्ज़ का इलहाम है। हमने अब से पहले किसी इलहामी इबारत में इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ नहीं देखे। इसके मअनी जो हमारे ख़याल में आते हैं कि ऐसा शख़्स बमंज़िला तौहीद ही होता है जो ऐसे वक़्त में मामूर हो कि जब दुनिया में तौहीद- ए-इलाही की इंतिहाई हतक की गई हो और निहायत ही हक़ारत से देखा जाता हो। ऐसा शख़्स मुजस्सम तौहीद ही होता है।

शिर्क और उसकी बारीक अक़साम का ज़िक्र करते हुए हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: यह भी चाहिए कि हर एक क़िस्म के शिर्क से परहेज़ हो न सूरज, न चाँद, न आसमान के सितारे, न हवा, न आग, न पानी, न कोई और ज़मीन की चीज़ माबूद ठहराई जाए और न दुनिया के असबाब को ऐसी इज़्ज़त दी जाए और ऐसा उन पर भरोसा किया जाए कि गोया वह ख़ुदा के शरीक हैं और न अपनी हिम्मत और कोशिश को कोई चीज़ समझा जाए कि यह भी शिर्क की क़िस्मों में से एक क़िस्म है बल्कि सब कुछ करके यह समझा जाए कि हमने कुछ नहीं किया और न अपने इल्म पर कोई ग़ुरूर किया जाए और न अपने अमल पर नाज़ बल्कि अपने आपको फ़ील-हक़ीक़त जाहिल समझें और काहिल समझें और ख़ुदा तआला के आस्ताने पर हर एक वक़्त रूह गिरी रहे। इंसान का इल्म किसी मुअल्लिम का मुहताज है और फिर महदूद है मगर उस ख़ुदा का इल्म किसी का मुहताज नहीं।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: आजकल के ज़ेर-ए-असर बअज़ दफ़ा बच्चों में भी यह सवाल उठते हैं और लिखते रहते हैं कि अल्लाह तआला को किसने पैदा किया। अल्लाह तआला कहाँ से आया। शायद बड़े उन्हें बताते हैं या ख़ुद उनके ज़हनों में सवाल उठते हैं लेकिन अल्लाह तआला की सिफ़ात ऐसी हैं कि अल्लाह तआला हमेशा से है और हमेशा रहेगा और लामहदूद है इसलिए उसी ने हर एक को पैदा किया है | उसे किसी ने पैदा नहीं किया। जो भी एक तसव्वुर पैदा हो सकता है किसी आख़िरी चीज़ का जो ख़ुद बख़ुद वजूद में आई वह ख़ुदा तआला ही है।

फ़रमाया: हक़ीक़ी तौहीद जिसका इक़रार ख़ुदा हम से चाहता है और जिसके इक़रार से नजात वाबस्ता है , यह है कि: ख़ुदा तआला को अपनी ज़ात में हर एक शरीक से ख़्वाह वह बुत हो, ख़्वाह इंसान हो, ख़्वाह सूरज हो या चाँद हो, या अपना नफ़्स हो, या अपनी तदबीर हो, या अपना मक्र व फ़रेब हो , मुनज़्ज़ह समझना और उसके मुक़ाबिल पर कोई क़ादिर तजवीज़ न करना, कोई रज़्ज़ाक़ न मानना, कोई मुइज़्ज़ और मुज़िल ख़याल न करना, कोई नासिर व मददगार क़रार न देना। और दूसरा यह कि अपनी मुहब्बत उसी से ख़ास करना, अपनी इबादत उसी से ख़ास करना, अपनी उम्मीदें उसी से ख़ास रखना, अपना ख़ौफ़ उसी से ख़ास करना। पस कोई तौहीद बग़ैर इन तीन क़िस्मों की तख़सीस के कामिल नहीं हो सकती: अव्वल — यह कि ज़ात के लिहाज़ से तौहीद ,यानी

तमाम मौजूदात को मअदूम की तरह समझना। दोम — सिफ़ात के लिहाज़ से तौहीद , यानी रुबूबियत और उलूहियत की सिफ़ात बजुज़ ज़ात-ए-बारी के किसी में क़रार न देना। सोम — अपनी मुहब्बत और सिद्क़ और सफ़ा के लिहाज़ से तौहीद यानी मुहब्बत वग़ैरह शआर-ए-उबूदियत में किसी को शरीक न ठहराना और उसी में खोए जाना।

फ़रमाया: ख़ुदा ने क़ुरआन करीम में सच फ़रमाया है कि क़रीब है कि इस इफ़तिरा से आसमान फट जाए कि एक आजिज़ इंसान को ख़ुदा बनाया जाता है। मेरा इस दर्द से यह हाल है कि अगर दूसरे लोग बहिश्त चाहते हैं तो मेरा बहिश्त यही है कि मैं अपनी ज़िंदगी में इस शिर्क से इंसानों को नजात पाते और ख़ुदा का जलाल ज़ाहिर होते हुए देख लूँ। और मेरी रूह हर वक़्त दुआ करती है कि: ऐ ख़ुदा! अगर मैं तेरी तरफ़ से हूँ और तेरे फ़ज़्ल का साया मेरे साथ है , तो तू मुझे यह दिन दिखला कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के सर से यह तुहमत उठा दी जाए कि गोया नऊज़ुबिल्लाह उन्होंने ख़ुदाई का दावा किया है।

एक ज़माना गुज़र गया कि मेरी पाँच वक़्त की यही दुआएँ हैं कि ख़ुदा उन लोगों को आँख बख़्शे और वह उसकी वहदानियत पर ईमान लाएँ और उसके रसूल को पहचान लें और तसलीस के अक़ीदे से तौबा कर लें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि ईसाइयत अमलन तो मअदूम होती जा रही है तसलीस का नज़रिया तो सिर्फ़ अब उनका किताबी नज़रिया रह गया है। बहुत कम हैं जो इस पर अमल करने वाले हैं यूरोप में ख़ुसूसन अफ़्रीक़ा और जनूबी अमेरिका में अभी भी हैं। लेकिन जो तसलीस के नज़रिए को छोड़ भी रहे हैं वह भी एक ख़ुदा को नहीं मानते। पस तौहीद पर क़ायम करने के लिए हमें जिस हद तक कोशिश मुमकिन हो वह करनी चाहिए।

अल्लाह तआला करे कि जिस मक़सद को पूरा करने के लिए अल्लाह तआला ने आप अलैहिस्सलाम को भेजा था और जिस तौहीद की तालीम का आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एलान फ़रमाया उस हक़ीक़ी तौहीद पर हम अमल करने वाले भी हों और दुनिया में फैलाने वाले भी हों। क्योंकि दुनिया की बक़ा का अब एक यही हल है।

ख़ुतबे के अंत पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मुकर्रम ख्वाजा ज़फ़र अहमद साहब साबिक़ अमीर जमाअत अहमदिया ज़िला स्यालकोट और मुकर्रम अज़रा गो अली साहब आफ़ बुर्किना फ़ासो का ज़िक्र-ए-ख़ैर फ़रमाते हुए हर दो मरहूमीन की मग़फ़िरत और बुलंदी-ए-दरजात के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّاٰتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ۔ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131